अपवित्रता के बीज को भी समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ (पवित्र) बनो

Finish The Seed of Impurity and Become Completely Clean (Pure)

August 1, 2026

व्यर्थ संकल्पों की अपवित्रता को खत्म करो
सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प भी अपवित्रता का बीज है। व्यर्थ संकल्प चलना, मैजारिटी बच्चों में अभी यह संस्कार रहा हुआ है। व्यर्थ संकल्प का आधार मन है, जो मनमनाभव होने नहीं देता इसलिए श्रीमत रूपी लगाम टाइट कर व्यर्थ संकल्पों की अपवित्रता को खत्म करो।

Finish all the impurity of waste thoughts
In terms of complete purity, even waste thoughts are seeds of impurity. The majority of you children still have the sanskar of having waste thoughts. The basis of waste thoughts is a mind that does not allow you to become Manmanabhav. Therefore, tighten the reins of shrimat and finish all the impurity of waste thoughts.

August 2,2026

दृढ़ संकल्प
दृढ़ता सफलता की चाबी है। सफलता आप बच्चों का जन्म सिद्ध अधिकार है, इसलिए दृढ़ता को यूज़ करो, अलबेले नहीं बनो, हो जायेगा, कर लेंगे.. यह नहीं सोचो। दृढ़ संकल्प से मन के व्यर्थ संकल्पों को समाप्त कर विजयी बनो।

Determined thoughts
Determination is the key to success and success is the birthright of you children. Therefore, use determination and do not become careless by thinking: “It will happen, I will do it…” Do not think in this way. Have the determination to finish all waste thoughts and become victorious.

August 3,2026

मन, वाणी, कर्म से पवित्र बनो
बापदादा का मुख्य फरमान है निरन्तर याद में रहो और मन, वाणी, कर्म से पवित्र बनो। संकल्प में भी अपवित्रता वा अशुद्धता न हो – इसको कहते हैं सम्पूर्ण पवित्र। संकल्प में भी अगर पुराने अशुद्ध संस्कार टच करते हैं, व्यर्थ संकल्प चलते हैं या स्वप्न आते हैं तो भी सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे इसलिए पवित्र भव व योगी भव के पहले पाठ को स्वप में लाओ तब ही बाप-समान और बाप के समीप आने के अधिकारी बन सकते हो।

Pure in your thoughts, words and deeds
BapDada’s main order is to stay constantly in remembrance and to remain pure in your thoughts, words and deeds. Not to have any impurity or uncleanliness, even in your thoughts, is to have complete purity. If your thoughts are touched by old, impure sanskars or you have waste thoughts or they come in your dreams, then this is not said to be complete purity. Therefore, put

the first lesson of: May you be pure and may you be yogi, into practice, for only then will you become equal to the Father and claim a right to come close to the Father.

August 4,2026

अगर बुद्धि में अशुद्ध संकल्प वा पुराने संस्कार संकल्प रूप में भी टच होते हैं तो सम्पूर्ण वैष्णव नहीं कहेंगे। जैसे कोई अकर्तव्य कार्य देखता भी है तो देखने का असर हो जाता है, उसका भी हिसाब बन जाता है। इस हिसाब से सोचो तो पुराने संस्कार व अशुद्ध संकल्प बुद्धि में अगर टच होते हैं तो भी सम्पूर्ण वैष्णव वा सम्पूर्ण पवित्र कैसे कहेंगे।

If your intellect is even slightly touched by impure thoughts or old sanskars, you cannot be called a perfect Vaishnav. When you see someone doing something wrong, even seeing that has an effect of you, and an account would be created. Similarly, just think: If your intellect is even slightly touched by old sanskars or impure thoughts, you could not be called a perfect Vaishnav or completely pure.

August 5,2026

आप आत्मायें ब्राह्मण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर भी, प्रकृति भी पवित्र बना देते हो इसलिए शरीर भी पवित्र है तो आत्मा भी पवित्र है। सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् अपवित्रता का अंश-मात्र भी न हो क्योंकि जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है। अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलायेगी।

You souls become so pure in your Brahmin life that you even make your bodies, matter, pure. Therefore, your body also becomes pure when your soul is pure. Totally pure means that there should not be the slightest trace of impurity. This is because, to the extent that you have purity, you will accordingly have the personality of Brahmin life. If there is some purity lacking in you, then this personality will also be lacking. This personality of purity easily enables you to achieve success in the service you do.

August 6,2026

पवित्रता और अपवित्रता का कारण है स्मृति। जब स्मृति रहती है कि यह देवी है तो स्मृति, दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है और स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति, वृत्ति और दृष्टि को अपवित्रता की तरफ खैंचती है। वहाँ रूप को देखेंगे और वहाँ रूहानियत को देखेंगे।

Awareness is the reason for purity and impurity. When you are aware of someone being a goddess that awareness makes your vision and attitude pure, whereas when you are aware of someone being a female, that awareness then draws your vision and attitude towards impurity. In one case, you are seeing the form (body) and in the other case you are seeing the spiritual.

August 7,2026

अगर कोई भी अपवित्रता वृत्ति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मण-पन की स्थिति में स्थित नहीं हो सकते इसलिए कदम-कदम पर सावधान रहो। विशेषताओं के साथ अगर कोई एक भी कमजोरी है तो एक कमजोरी अनेक विशेषताओं को समाप्त कर देती है।

If you have any impurity in your attitude, awareness or thoughts, you cannot remain stable in your Brahmin stage. Therefore, you have to remain cautious at every step. You may have specialities, but if you have even one weakness, that one weakness would then finish your many specialities.

August 8,2026

कोई भी विकर्म वा व्यर्थ कर्म अगर बार-बार हो जाते हैं तो इसका कारण है कि सदा साथी को साथ में नहीं रखते हो अथवा साथ का अनुभव नहीं करते हो। जैसे शक्तियां एक सेकण्ड की दृष्टि से असुर संघार करती हैं, ऐसे कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से अपने आसुरी संस्कार वा अपवित्रता के संकल्पों को सेकण्ड में संघार करो।

If you are repeatedly performing some sinful or wasteful action, it means that you are not keeping your Companion with you constantly or that you are not experiencing His company. Just as the Shaktis are able to destroy evil with one second's drishti, in the same way, by remaining aware of your combined form, you can destroy your devilish sanskars or thoughts of impurity in a second.

August 9,2026

जैसे छुईमुई का पौधा जरा भी हाथ लगाने से शक्तिहीन हो जाता है, उसमें टाइम नहीं लगता। ऐसे आप एक सेकण्ड के शुद्ध संकल्प की शक्ति से माया को छुईमुई मुआफिक मूर्छित कर दो। अपना निजी-स्वरूप, वरदानी- स्वरूप, सदा ही स्मृति में रहे तो अपवित्रता वा विस्मृति का नामोनिशान भी न रहे।

Just as a touch-me-not plant becomes powerless as soon as you touch it, even slightly, in the same way, make Maya, the touch-me-not plant, unconscious in a second with the power of your pure thought. Constantly keep your original form and your blessed form in your awareness and no name or trace of any impurity or forgetfulness will then remain.

August 10,2026

मैं संगमयुगी ब्राह्मण हूँ, यह व्यर्थ संकल्प, अपवित्रता के संस्कार शूद्र के संस्कार व स्वरूप हैं। ऐसा अनुभव हो कि यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं लेकिन शूद्रपन के हैं, उनको | मेरा समझते हो तो माया के वश होकर परेशान होते हो।

I am a confluence-aged Brahmin. This is not a waste thought, sanskar of impurity or sanskar of a shudra. Experience the sanskars of impurity and forgetfulness not to be yours, not those of a

Brahmin, but those of a shudra. When you consider those to be yours, you become distressed or influenced by Maya.

August 11,2026

जब अपवित्रता अर्थात् काम महाशत्रु स्वप्न वा संकल्प में भी वार न करे तब कहेंगे डबल अहिंसक । सदा भाई- भाई की स्मृति सहज और स्वतः स्मृति स्वरूप में रहे। कभी अपनी सम्पूर्ण सतोप्रधान स्टेज से नीचे गिरकर अपना घात नहीं करना। आत्मा के असली गुण-स्वरूप और शक्ति- स्वरूप स्थिति से नीचे आना अर्थात विस्मृत होना, यह भी पाप के खाते में जमा होता है।

When the vice of impurity doesn't disturb you in your dreams or thoughts, you can then be said to be doubly non-violent. Constantly be aware of brotherhood easily and naturally, that is, be an embodiment of remembrance. Never come down from your complete and satopradhan stage and thereby commit suicide. To come down from your original, virtuous and powerful form of being a soul means to forget, and that would be accumulated in the account of sin.

August 12,2026

संकल्प व स्वप्न में भी जब अपवित्रता का अंशमात्र न हो तब कहेंगे सच्चे ब्राह्मण, इसी धारणा के लिए ही गायन है 'प्राण जाएं पर धर्म न जाए।' ऐसी हिम्मत, ऐसा दृढ़ निश्चय करने वाले किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपने धर्म अर्थात् धारणा के प्रति कुछ भी त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करते हैं, पीछे नहीं हटते।

When there is no trace of impurity in your thoughts or dreams, you will then be said to be a true Brahmin. For this dharna, it is said: You must not renounce your religion even if you have to die. Those who have such courage and determined faith will never step back from any situation, but will happily have renunciation, toleration, and be able to face anything and remain courageous.

August 13,2026

सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् मन्सा में भी किसी एक विकार का अंश भी न हो। ज्ञान, गुण और सर्व शक्तियों की प्राप्ति में सदा सम्पन्न, सर्व प्राप्तियों के लाइट का क्राउन स्पष्ट दिखाई दे। स्वयं को सदा लाइट आत्मिक रूप में अनुभव करे। कर्म में भी अपने को लाइट (हल्का) महसूस करे।

Complete purity means not to have any vice even in your thoughts. In your attaining this knowledge, these virtues and all the powers, your crown of light of always being complete and perfect and having all attainments should constantly be clearly visible. Constantly experience yourself to be light and in your soul-conscious form. Experience yourself to be light when doing everything.

August 14,2026

सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मणों का श्रृंगार है, सदा श्रृंगार की हुई मूर्त अर्थात् सदा पवित्र स्वरूप में स्थित रह बेहद की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाओ। सदा ब्रह्मचारी अर्थात् संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता वृत्ति को चंचल नहीं बनाये। वृत्ति की चंचलता भी रज़िस्टर को दागी बना देती है - इसलिए वृत्ति से भी सदा ब्रह्मचारी बनो।

Complete purity is the decoration of you Brahmins. Constantly remain a decorated image, that is, remain stable in your pure form and play your hero part on this unlimited stage. Remain constantly brahmachari (celibate, pure), so that no type of impurity, even in thoughts, disturbs your attitude. Any disturbance or mischief in your attitude will put a black mark on your register. Therefore, remain constantly celibate even in your attitude.

August 15,2026

जैसे आपका आदि स्वरूप पवित्र देवता है, ऐसे यह अन्तिम जन्म भी पवित्र ब्राह्मण जीवन है, इस स्मृति के आधार पर पवित्र जीवन अति सहज अनुभव करो। पवित्र बनो, योगी बनो - यही महामन्त्र सर्व प्राप्तियों की चाबी है। अगर पवित्रता नहीं, योगी जीवन नहीं तो अधिकारी होते हुए भी अधिकार की अनुभूति नहीं कर सकेंगे। यह महामन्त्र ही सर्व खजानों के अनुभूति की चाबी है।

Just as your original form is that of a pure deity, in the same way, this final birth is that of a pure Brahmin life. On the basis of this awareness, experience having a pure life to be extremely easy. Be pure and be yogi: this great mantra is the key to all attainments. If there is no purity, no yogi life, then, even while having all rights, you will not be able to experience your rights. This great mantra is the key to experiencing all treasures.

August 16,2026

आप होलीहंस बच्चों का आहार भी शुद्ध, व्यवहार भी शुद्ध, अशुद्धि का नाम निशान भी न हो क्योंकि शुद्ध दुनिया में जा रहे हो जहाँ अपवित्रता वा अशुद्धि का नामनिशान नहीं है। जब ऐसे होलीहंस बनते हो तब भविष्य में हिज़ होलीनेस कहलाते हो।

The food, drink and interaction of you holy swan children have to be pure. There can be no name or trace of impurity, because you are going to a pure world, where there is no name or trace of impurity or uncleanliness. When you become such holy swans, you will be called “His Holiness” in the future.

August 17,2026

अगर ब्राह्मण जीवन में संकल्प में भी अपवित्रता वा अमर्यादा आ जाती है तो तख्तनशीन की बजाए गिरती कला में अर्थात् नीचे आ जाते हो। कोई विकर्म नहीं हुआ लेकिन व्यर्थ कर्म भी हुआ तो पश्चाताप के बजाए महसूसता की

स्टेज होती है। महसूस होता है कि यह राँग है, नहीं होना चाहिए.. वह बात काँटे के समान चुभती रहेगी, इसलिए इस व्यर्थ से भी मुक्त बनो।

If you have any impurity or you break one of the code of conduct in this respect in Brahmin life even in your thoughts, then, instead of being seated on the throne, you go into a descending stage. You may not have performed any sinful action, but even if you performed a wasteful action, then, instead of repentance, you will have realisation. You will realise that that was wrong and that it should not have happened and it will prick you like a thorn. Therefore, become free from all waste.

August 18,2026

ईश्वरीय सेवा का बड़े-से-बड़ा पुण्य है – पवित्रता का दान देना। पवित्र बनना और बनाना ही पुण्य आत्मा बनना है क्योंकि किसी आत्मा को आत्मघात महा पाप से छुड़ाते हो। अपवित्रता आत्मघात है। पवित्रता जीयदान है।

The greatest charity of Godly service is the donation of purity. For you to become pure and make others pure is to become a charitable soul, because you are liberating a soul from the great sin of committing suicide. Impurity is suicide of the soul and purity is the donation of life.

August 19,2026

पवित्रता आप ब्राह्मण आत्माओं का अनादि आदि संस्कार है, इस नैचुरल संस्कार से स्वप्न व संकल्प में भी अपवित्रता इमर्ज न हो। संकल्प आवे और विजयी बनो, इनसे भी ऊपर नैचुरल संस्कार बना लो। तो इस सबजेक्ट में पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

The original and eternal sanskar of you Brahmin souls is purity. When you use this natural sanskar, impurity should not even emerge in your dreams or thoughts. Now, go even beyond having such thoughts and become victorious over them by making purity your natural sanskar. There should then be no need to make effort in this subject.

August 20,2026

संगमयुग पर बापदादा ने सभी बच्चों को पहला व्रत दिया है - "सम्पूर्ण पवित्र भव'। यह पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं है लेकिन ब्रह्मा बाप समान हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्व हो। हर कर्म में, कर्मयोगी जीवन का अनुभव हो - इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी सो ब्रह्माचारी।

At this confluence age, BapDada gave all of you children the first vow: “May you be completely pure.” This vow of purity is not just a vow of celibacy, but, like Father Brahma, let every word have the vibration of purity merged in it. In every thought, let there be the importance of purity. In every action, let there be the experience of a karma yogi life. This is called being a Brahmchari (one who follows in the footsteps of Brahma) and brahmachari (one who is celibate).

August 21,2026

पवित्रता ही महानता है, यही योगी जीवन का आधार है। जरा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता के अंश को समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ बनो। सदा यही स्मृति रहे कि मैं पूज्य आत्मा इस | शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ।

Purity is greatness. This is the basis of a yogi life. If there is the slightest trace of impurity towards anyone, there cannot be the remembrance of the pure Father, as He is and what He is. Therefore, finish any trace of impurity in your mind and become completely pure and clean. Constantly have this awareness: I am a worthy of worship soul residing in the temple of this body.

August 22,2026

ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। जमा करने की विधि है - मन्सा, वाचा, कर्मणा पवित्रता। फाउन्डेशन पवित्रता है। सेवा में सफलता का आधार भी पवित्रता है। संकल्प वा बोल में और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता हो।

In order to experience the natural inheritance of Brahmin life, which is constant happiness, being an embodiment of peace and having contentment of the mind, you have to have purity of your mind. The way to accumulate this is to have purity in your thoughts, words and actions. The foundation is purity. The basis of success in service is also purity. Let there not be any other feelings mixed in your thoughts or words. Let there be purity in your intentions and also in your feelings.

August 23,2026

ब्रह्मा बाप और शिव बाप की विशेष पसन्दगी है ही पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत श्रेष्ठ और गुह्य है। पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफाई, ये सब आ जाता है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ ही है स्वप्नमात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे, इसी को ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव ।

The special preference of Father Brahma and Father Shiva is purity. However, the definition of purity is very deep. When there is purity, then faith, honesty and cleanliness also develop naturally. The meaning of complete purity is that impurity does not touch your mind or intellect even in your dreams. This is called being a true Vaishnav.

August 24,2026

पवित्रता का रहस्य प्रैक्टिकल में लाना अर्थात् संकल्प रूप से भी पांचों विकारों पर विजयी बनना। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो यह व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर करो।

To put the significance of purity into your practical life means to be victorious over all the five vices even in your thoughts. Wasteful thoughts create anger. Therefore, if there is any lustful or wasteful vision towards any soul, that is not considered to be purity. So, surrender those wasteful thoughts out of love for the Father.

August 25,2026

पवित्रता फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ये कॉमन बात है लेकिन अभी आगे बढ़े हो तो बचपन की स्टेज नहीं है, अभी तो वानप्रस्थ स्थिति में जाना है। मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता तो है ही, सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। मूल फाउण्डेशन अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ।

Purity is the foundation. So, to make the vow of celibacy for the foundation is common. However, you have now moved forward and so you are no longer in the stage of childhood. You now have to go into the stage of retirement. “I do remain celibate, I have purity anyway”. Do not become happy with just that. Make your mind, your main foundation, pure. Make it an embodiment of this knowledge and an embodiment of power.

August 26,2026

बाप के साथ आप सबने भी पान का बीड़ा उठाया है कि पवित्रता द्वारा हम प्रकृति को भी पावन करेंगे। तो ये संकल्प पूरा करने के लिए बापदादा चाहते हैं कि विश्व का हर एक बच्चा पहले लगाव मुक्त बने – चाहे साधनों से, चाहे व्यक्ति से। साधनों को यूज़ करना और चीज़ है, लगाव अलग चीज़ है। तो बापदादा हर बच्चे को पहले लगावमुक्त बनाना चाहते हैं।

Together with the Father, all of you have also taken the responsibility of purifying the elements of nature too. So, in order for you to fulfil this thought, BapDada wants every child first of all to become free from attachment in this world, whether to facilities or people. To use the facilities is a different matter from having attachment. So, BapDada first of all wants to make every child become free from attachment.

August 27,2026

परमात्म ज्ञान की नवीनता पवित्रता है। फ़लक से कहते हो ना कि आग कपूस इकट्ठा रहते भी आग नहीं लग सकती। आप लोग भाषणों में भी कहते हो कि पवित्रता के बिना योगी तू आत्मा, ज्ञानी तू आत्मा बन ही नहीं सकते। तो यह चैलेन्ज अब प्रैक्टिकल रूप में लाओ।

The newness of God’s knowledge is purity. You say with spiritual intoxication that even when cotton wool lives with fire, it cannot catch fire. You even say in your lectures that, without purity, you cannot become yogi and gyani souls. So, now put this challenge into practice.

August 28,2026

अगर पवित्रता का नियम पक्का है तो लगाव मुक्त, ईर्ष्या और क्रोध से भी मुक्त बनो। चिड़चिड़ापन भी न हो। यह भी लगाव नहीं रखो कि यह होना ही चाहिए। स्वार्थ या ईर्ष्या के वश कोई बात कहेंगे और वह पूरी नहीं होगी तो क्रोध पैदा होगा इसलिए पवित्रता के पिल्लर को पक्का करो तो यह पिल्लर लाइट हाउस का काम करेगा।

If your discipline of purity is strong, you can become free from attachment, jealousy and anger. Don’t have any irritation either. Do not have any attachment to any outcome - that something should definitely happen. If someone speaks selfishly or out of jealousy and his desire is not fulfilled, there will be anger. Therefore, make your pillar of purity strong and your pillar will work like a lighthouse.

August 29,2026

सम्पूर्ण सत्यता भी पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। सिर्फ काम विकार अपवित्रता नहीं है, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नाम- निशान न हो।

Complete truth is based on purity. If there is no purity, there cannot be constant truth. The vice of lust is not the only impurity, because it also has other companions. So, to be really pure means that there is no name or trace of impurity.

August 30,2026

पवित्रता की शमा सदा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ जलती रहे, ज़रा भी हलचल में नहीं आये, अचल। जितनी अचल पवित्रता की शमा होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे और पवित्रता की जयजयकार होगी। पवित्रता की पर्सनालिटी को सदा इमर्ज रूप में स्मृति में रखो। स्मृति ही समर्थी का आधार है और जहाँ समर्थी है वहाँ माया आ नहीं सकती। समर्थ आत्मा के पास माया का आना असम्भव है।

Let flame of purity be constantly elevated and ignited; let it not have the slightest disturbance, but remain unshakeable. The more unshakeable your flame of purity is, the more easily everyone will be able to recognise the Father and there will be victory for purity. Constantly keep the personality of purity emerged in your awareness. Your awareness is the basis of your power and, where there is power, Maya cannot come. It is impossible for Maya to come to a powerful soul.

August 31,2026

पवित्रता की निशानी है - स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में, चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर ज़रा-सा अन्तर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं है। अपवित्रता सिर्फ किसको दुःख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो।

The sign of purity is cleanliness and truth. Throughout the day, whether you are sitting, moving around, speaking, or doing physical or subtle service, if it is not done in the right way, if there is the slightest difference in your way of doing it, then that too is not cleanliness, which means it is not purity. Simply to cause someone sorrow or to perform a sinful action is not the only impurity. However, if you experience truth and cleanliness in yourself in the right way, then you are pure.